अणुव्रत सप्ताह का समापन

गांधी को जैन धर्म से मिले थे संस्कार : आचार्य महाश्रमण

सरदारशहर 2 अक्टूबर, 2010

आचार्यश्री महाश्रमण ने अणव्रत सप्ताह के अंतिम दिन अहिंसा दिवस पर कहा कि जब जीवन में समता का विकास होता है तब अहिंसा व्यवहार में उतरती है जो सहन करना जातना है, मौके पर कहता है और शांति से रहता है वह परिवार में सौहार्द रख सकता है।

उन्होंने महात्मा गांधी और लाल बहादुर शास्त्री की जयंती का उल्लेख करते हुए कहा कि गांधीजी का जैन परिवार ननिहाल था। उनको जैन धर्म से संस्कार प्राप्त हुए थे। जब वे विदेश जा रहे थे तब जैन मुनि से शराब, मांस और स्त्रियों के संसर्ग से दूरी रखने के नियम ग्रहण किये थे। जैन संस्कारों ने उनको अहिंसा के प्रति आकर्षित किया। आचार्य महाश्रमण ने जैन धर्म में अहिंसा के सूक्ष्म विश्लेषण को परिभाषित करते हुए कहा कि गृहस्थपूर्ण हिंसा से नहीं बच सकता। उसे खेती आदि कार्यों में हिंसा करनी होती है। खेती में जितना संभव हो उतना बचा जा सकता है, पर हिंसा तो होती है। इसी को ध्यान में रखते हुए हिंसा के तीन विभाग हुए। आरंभजा हिंसा, प्रतिरोधजा हिंसा और संकल्पजा हिंसा। आरंभजा हिंसा में खेती आदि आते हैं। प्रतिरोध में स्वयं की रक्षा, देश की रक्षा आदि और संकल्पजा हिंसा में संकल्पपूर्वक निरपराध प्राणी की हत्या करना आता है। मनुष्य प्रथम दो हिंसा से बच नहीं पाता पर वह संकल्प हिंसा बचकर रहे, यह अपेक्षा है। उन्होंने कहा कि अभयदान दानों श्रेष्ठ दान है महादान है। प्राणी मात्र को अभय देना, स्वयं भय मुक्त रहना अहिंसा का ही प्रयोग है।

जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के अहिंसा एवं शांति विभाग की सहविभागाध्यक्ष समणी सत्यप्रज्ञा ने कहा कि संवेदनशीलता का विकास ही मनुष्य को मनुष्य बनाये रखता है। उन्होंने अहिंसा उपयोगिता पर विशद विश्लेषण किया। मुनि अक्षयप्रकाश ने अपने विचार रखे, मुनि महावीर कुमार ने मंगलाचरण किया। अणुव्रत समिति के मंत्री मनीष पटावरी ने आभार ज्ञापन किया। संचालन राजू चौहान ने किया।

– ***शीतल बरड़िया*** *(मीडिया संयोजक)*